संग्री कि एफ हो कि 85/33920 — चूफि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि में बी०एम०सी० न्टोन प्रशर गृरु-कुंस करीदाबाद के अमिक श्री कीतर सिंह, तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीद्योगिक के जिवाद है

श्रीर चुकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं।

इस लिए, अब, भी धोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिलिए, अब, भी धोगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिलिए। इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 5415-3-श्रम-68/15254, दिनांक 20 जिन, 1968 के सीच पैडते हुए अधिसूचना सं 11495-जी-श्रम-57/11245 दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उनन अधिसूचना को धारी है के अवीत मिलिए अपने स्वायाल के सिरावाद को विवाद पर या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्याय-निर्णय एवं प्रवाद की देश हैं। निर्णय करों हैं जो के उसने प्रवत्था श्रीमक के खोच या तो विवाद पर मामला है सुने स्वीति सम्बन्धित सामला है हैं।

विवाह आहु अति वृक्षित के समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं तो वह कि राहत का हकदार है ?

में कि में राज हं; होटल सूरज कुण्ड फीए ब्रिंग के अमिन भी डेतिम देवे तथी उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई सौद्योगिक विवाद है; भी कि ब्रिंग कि हिरियोगिक त्रियापाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं; इस ब्रियोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई

क्या श्री उत्तम देवें की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? दिनांक 14 श्रगस्त, 1985

सं भी वि ए पहि. 125-85/33954 — चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राम है कि मैं० रखेजा इलैक्ट्रिकल एण्ड इन्जिं० वर्कस 2-डी नोगी बोबी मन्दिर एन श्राई टी फरीदाबाद के श्रमिक श्री गौतम मंडल तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बोद लिखित मामले में कोई श्रीधोगिक विवाद है;

् भीर चुक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

निया भी गीह में पेडले की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

में मार्गिविद्यापिक हो /2-84/33961.—चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० राज एण्ड प्रवीण प्रिटिंग प्रमुद्धि हो के दिल्ली के हिम्मित के कि प्रमुक्त की चन्द्र प्रकाश शर्मा तथा उस के प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मोमेले में को शोधीगिक, विवाद है ;

भीर चूकि हैरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हैसु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ;

इसलियें भार भी बीगिक विवाद प्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई कित्यों का प्रयोग करते हुए इरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रधिसूचना सं. 5415-3-68/16254, दिनांक 20 जून, 1968 की साथ पढ़ेते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम/67/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिसूचना की धारा, 7 के मधीन माजिस मन्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला क्यायनिर्णय एवं प्रधार सास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जीकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त भामला है या विवाद से सुसंगत प्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या की जन्द प्रकाश भर्मा की सेवामों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है 📍